दैनिक भास्कर

4/6/15

जलवायु अनुसार पशुपालन व खेती करने से होगा लाभ

मालपुरा। केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर के वैज्ञानिकों ने कहा है कि जलवायु परिर्वतन के कारण उत्पन्न होने वाली विभिन्न परिस्थितियों में जलवायु के अनुसार पशुपालन व खेती कर किसान ज्यादा आर्थिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

गर्मी के मौसम में पानी व चारे की समस्या के मद्यनजर अविकानगर में बुधवार को किसान जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मालपुरा क्षैत्र के करीब पचास किसानों ने भाग लिया। कार्यवाहक निदेशक डॉ. धीरेंद्र सिंह ने इस अवसर पर किसानों को बताया कि जलवायु परिर्वतन के कारण भेड़ों के रख रखाव में परेशानी आती है ऐसे में जानवरों के रख रखाव में परिवर्तन जरूरी है। उन्होंने भीषण गर्मी में भेड़ों के प्रजनन व नवजात मेमनों के उन्नत आवास विकसित करने की सलाह दी। डॉ. आर्तबंधु साहू ने किसानों को गर्मी के दौरान भेड़ों के खिलाई पिलाई के गुर बताए। गर्मी के मौसम में चारे की कमी के चलते अपरांपरिक पौधे जैसे नागफनी व ऊंटकटेला तथा चौलाई एवं अजोला इत्यादि को खिलाने के उपाय बताए। टीओटी प्रभारी डॉ. राजीव गुलयानी ने किसानों से आह्वान किया कि वे जागरूक होकर पशु पालन व कृषि कार्य करें।

मालपुरा. केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान में किसान जागरूकता कार्यक्रम में आए किसानों ने गर्मी में उगने वाली चारे की फसलें देखी।

उन्होंने किसानों से कहा कि वे अविकानगर में विकसित की गई उन्नत तकनीकों को अपनाएं जिससे सूखे की हालत में भी भेड़ पालन आसानी से किसा जासके तथा उत्पादकता बढ़ाई जा सके। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उप निदेशक कृषि विभाग राजस्थान टोंक निरंजन सिंह राठौड ने कहा कि जलवायु के अनुरूप खेती व पशुपालन के लिए अविकानगर के वैज्ञानिकों ने कई तकनीकें विकसित की हैं। जिन्हें किसानों द्वारा अपनाया जाना चाहिए। उन्होंने राज्य के कृषि विभाग द्वारा किसानों के लिए चलाई जा रही लाभकारी योजनाओं की जानकारी भी दी।

राजस्थान पत्रिका
4/6/15

कृषि व पशुपालन में भी बदलाव लाएं

मालपुरा क्षेत्र के केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर में फसलों की जानकारी लेते किसान।

नवाचार की जानकारी दी

मालपुरा @ पत्रिका

patrika.com

केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर में बुधवार को जलवायु अनुरूप खेती में नवाचार पर किसान जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें किसानों को जलवायु परिवर्तन के अनुसार कृषि एवं पशुपालन कार्य में बदलाव लाने की सलाह दी गई।

मुख्य अतिथि कृषि उपनिदेशक निरंजन सिंह राठौड़ ने कहा कि जलवायु परिवर्तन से कृषि एवं पशुपालन का कार्य सबसे अधिक प्रभावित होता है। इससे कृषि के साथ-साथ पशुपालन व पशु पोषण में भी कई प्रकार की समस्याएं उत्पन्न होती है। गर्मी के मौसम में पशुओं के लिए चारे व पानी की समस्या हो जाती है। संस्थान के कार्यवाहक निदेशक डॉ. धीरेन्द्र सिंह ने कहा कि जलवायु परिवर्तन के दौर में भेड़ों के रख-रखाव में भी परिवर्तन करना आवश्यक हो गया है। परियोजना के प्रमुख डॉ. आर्त बन्धु साहू ने किसानों को भेड़ों को विभिन्न विधियों से खिलाई-पिलाई सम्बन्धी जानकारी दी।

सामाजिक विज्ञान प्रभारी डॉ. राजीव गुलयानी ने भेड़ पालकों को वैज्ञानिक तरीके से पशुपालन करने को कहा। डॉ. देवेन्द्र कुमार, डॉ. सुरेश चंद्र शर्मा, डॉ. सुरेन्द्र ने भी विचार व्यक्त किए। इस दौरान किसानों को संस्थान का भ्रमण कराकर तैयार की जा रही फसलों के बारे में भी जानकारी दी गई।